CHAPTER 8

1. कवितावली (उत्तर कांड से)

2. लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

PAGE 51, प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :1

कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर: कवितावली में उद्धृत छंदों से स्पष्ट है कि गोस्वामी तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने अपने छंदों में समकालीन समाज की स्थिति का यथार्थवादी चित्रण किया है। समाज के विभिन्न वर्गों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा है कि विभिन्न वर्गों के पास कई तरह के काम करके जीवन होता है। वे यहां तक कहते हैं कि लोग अपनी भूख को संतुष्ट करने के लिए सभी सही और

अनुचित काम करते हैं। उनके अनुसार उस दौर में अत्यधिक गरीबी और बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपने बच्चों को बेचने के लिए भी मजबूर थे। बेरोजगारी ऐसी थी कि लोगों को भिक्षा भी नहीं मिलती थी। दुर्बलता के दानव ने कहर ढाया था।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :2

पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर: मनुष्य का जन्म, कर्म, कर्म-फल सभी ईश्वर के अधीन हैं। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि पेट की आग को बुझाने का अर्थ है कि इसे बुझाने का कार्य केवल भगवान (राम) द्वारा किया जा सकता है, जो भक्ति के बादल हैं। इसे कम करना संभव है। फल प्राप्त करने के लिए दोनों के बीच संतुलन होना नितांत आवश्यक है। कड़ी मेहनत के साथ-साथ पेट की शांति के लिए भगवान की कृपा होना बहुत जरूरी है।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :3

तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ/ काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास के युग में, जाति से संबंधित नियम बहुत सख्त लगते हैं। समकालीन समाज ने भी अपनी जाति और जाति के संबंध पर सवाल उठाए थे। तुलसीदास भक्त-कवि थे और सांसारिक संबंधों में उनकी विशेष रुचि नहीं थी। इस कहानी में वे कहते हैं कि अगर जब उन्होंने अपनी बेटी की शादी के बारे में बात की, तो सामाजिक संदर्भ में अंतर होगा, क्योंकि शादी के बाद लड़की को अपनी जाति छोड़नी पड़ती है और उसके पति की जाति को अपनाना पड़ता है। दूसरे, अगर तुलसीदास अपनी बेटी की शादी नहीं करने का फैसला करते हैं, तो इसे समाज में निंदा, गलतफहमी के रूप में भी देखा जाएगा, और तीसरा, अगर उन्होंने अपनी बेटी की शादी किसी अन्य जाति में करते है तो सामाजिक संघर्ष उत्पन्न हो जायेगा।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :4

धूत कहौ.... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास के स्वाभिमान पर किसी को संदेह नहीं होगा। उन्होंने इस कविता में अपना स्वाभिमान व्यक्त किया है। वह एक सच्चे भक्त हैं और उनके प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। किसी भी कीमत पर उन्होंने अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं किया और एक ही इशारे से राम की पूजा की। कि यह कविता भक्त-हृदय की भक्ति की गहराई और गहनता में भक्ति का जीवंत चित्रण है, जिसे समाज में व्याप्त जाति और उत्पीड़न से घृणा करने का साहस देता है। तुलसीदास जी, जो राम भक्ति में लगे हैं, का समाज के कटाक्ष पर कोई प्रभाव नहीं है। वे किसी पर निर्भर नहीं हैं, अपना जीवन भीख मांगकर जीते हैं और मस्जिद में सोने जाते हैं। वे परवाह नहीं करते हैं और किसी के साथ कोई

व्यवहार नहीं करते हैं। वे बाहर से कोमल और सीधे हैं, लेकिन दिल में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा है।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :5

व्याख्या करें-

(क) मम हित लागि जतेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।

(ख) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

(ग) माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।।

(घ) ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।

उत्तर:

(क).मूर्छित लक्ष्मण का सिर अपनी गोद में रखे हुए श्री राम विलाप करते हुए लक्ष्मण की निःस्वार्थ सेवा को याद करते हुए कहते हैं कि “हे लक्ष्मण!तुम तो ऐसे त्यागी मेरे भाई हो,तो

क्या तुम्हें मेरी व्याकुलता तुमसे उठ बैठने को नहीं कहती?तुमने कि तुमने केवल मेरे हित के लिए माता-पिता और जीवन के सारे सुखों का परित्याग कर दिया और मेरे संग वनवास स्वीकार किया ।वन में रहते हुए तुमने सर्दी,गर्मी,धूप,वर्षा,आंधी सबकुछ सहन किया ।यदि मुझे पहले ज्ञात होता कि वन में मैं अपने भाई से बिछड़ जाऊँगा तो मैं पिता की बात नहीं मानता(जो कि परम कर्तव्य था) और ना ही तुम्हें अपने साथ लेकर वन आता।"

(ख).मूर्छित लक्ष्मण के समक्ष विलाप करते श्री राम कह रहे हैं कि हे लक्ष्मण!तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी दयनीय हो गई है जैसे पंखों बिना पक्षी,मणि बिना सर्प और सूंड़ बिना हाथी की हो जाती है ।मैं तो पूरी तरह असहाय और अक्षम हो गया हूँ।यदि भाग्य ने मुझे तुम्हारे बिना जीवित रखा तो मेरा जीवन इसी प्रकार शक्तिहीन रहेगा ।कहने का तात्पर्य ये कि श्री राम के तेज और उनके पराक्रम के पीछे लक्ष्मण की ही शक्ति कार्य करती रही है।

(ग).तुलसीदास ने समाज से अपनी तटस्थता की बात कही है।उन्होंने अपने स्वाभिमान रक्षा का भी संकेत दिया है और कहा है कि समाज की बातों का उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।वे किसी पर आश्रित नहीं हैं वे मात्र राम के भक्त

हैं,उन्ही के सेवक हैं ।संसार से उन्हें कोई लेना-देना नहीं है।भिक्षावृत्ति से जीवन-निर्वाह हो जाता है और मस्जिद में उन्हें सोने का स्थान मिल जाता है।

(घ).गोस्वामी जी ने अपने काल की आर्थिक दशा का यथार्थपरक चित्रण किया है।पेट भरने के लिए लोग उस दौर में छोटे-बड़े,उचित-अनुचित सभी तरह के कार्य कर रहे हैं ।उन्हें कर्म की प्रवृत्ति और तरीके की कोई परवाह नहीं है ।यहाँ तक की अपना पेट भरने के लिए,भूख की आग को शांत करने के लिए लोग अपनी संतानों को भी बेचने पर विवश हैं।अर्थात् पेट भरने के लिए व्यक्ति कोई भी पाप कर्म कर सकता है।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :6

भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर: जब लक्ष्मण बेहोश होते हैं, तो राम का विलाप एक दिव्य लीला की तुलना में एक सामान्य व्यक्ति का प्रलाप अधिक प्रतीत होता है। श्री राम द्वारा कई ऐसी बातें कही गई हैं जो केवल आम आदमी ही कहेगा, जैसे कि मुझे पहले

आपके वियोग के बारे में पता था, मैं आपका साथ दूंगा। मैं उन्हें जंगल में नहीं लाता। मैं अयोध्या जाऊंगा और अपना चेहरा अपने परिवार को दिखाऊंगा, मैं अपनी मां को क्या जवाब दूंगा आदि दिव्य व्यक्तित्व वाले व्यक्ति को ये बातें नहीं बोलनी चाहिए। यह नहीं हो सकता क्योंकि कारण और परिणाम से पहले ही सब कुछ उसके लिए जाना जाता है। वह इस तरह शोक भी नहीं करता। लक्ष्मण के बिना खुद को अधूरा कहना भी आम आदमी की भावना है। इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने राम को एक आम व्यक्ति की तरह दिया। को बड़बड़ाते हुए दिखाया गया है, जो उसके सच्चे मानवीय अनुभव के अनुरूप है। वास्तव में, यह विलाप राम की संकीर्णता से अधिक मानवीय अनुभव है।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :7

शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर: लक्ष्मण के इलाज के लिए संजीवनी बूटी लेकर आए हनुमान को आने में देर हो गई। इधर लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम की नाराजगी से वानर सेना शोकाकुल और चिंतित

थी। इस बीच, गहरा शोक था कि इस बीच हनुमान संजीवनी बूटी के साथ संपन्न हुए। पूरा पहाड़ उठाकर वह वहाँ पहुँच गया। वैद्य सुषेण ने तुरंत संजीवनी बूटी से दवा तैयार की और लक्ष्मण को पिला दी, लक्ष्मण जल्दी से खड़े हो गए और उनके खड़े होने से राम का शोक समाप्त हो गया और सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई। लक्ष्मण स्वयं एक उत्साही वीर थे, सेना की खोई हुई शक्ति और उनके पुनरुत्थान से फलते-फूलते लौट आए। इस तरह, हनुमान के पहाड़ों को उठाकर, शोक के माहौल में वीरता का रस लाते हैं।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :8

जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं।। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर: लक्ष्मण के शोक में डूबे राम कहते हैं कि मैं अपना चेहरा अयोध्या ले जाऊंगा? लोग कहेंगे कि उन्होंने अपने प्यारे भाई को पत्नी के लिए नहीं खोया है। वे कहते हैं कि मैं

महिला की रक्षा करने में सक्षम नहीं होने की अपर्याप्तता को सहन करूंगा, लेकिन भाई के नुकसान का नुकसान उठाना मुश्किल है। राम जी का ये कथन भारत में स्त्रियों की दशा का वर्णन नहीं करता है। राम जी कहते है की अपनी स्त्री को नहीं बचा पाने का अपयश तो वो सह लेते परन्तु जो भाई बिना किस स्वार्थ के उनकी सेवा में चला आया उसकी मृत्यु का अपयश नहीं सह पाएंगे। आज के समय में नारी को पुरुष के समान अधिकार नहीं है। उसे केवल उपभोग की वस्तु समझा जाता है। उसे निर्बल और असहाय समझकर उसके आत्म-सम्मान को चोट पहुंचाई जाती है।

PAGE 52, प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:1

कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में पत्नी (इंदुमती) के मृत्यु-शोक पर अज तथा निराला की सरोज-स्मृति में पुत्री (सरोज) के मृत्यु-शोक पर पिता के करुण उद्‌गार निकले हैं। उनसे भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें।

उत्तर: “सरोज-स्मृति” में महाकवि ‘निराला’ ने अपनी पुत्री की मृत्यु पर जो उद्गार व्यक्त किये थे,वे एक असहाय पिता के उद्गार थे जो अपनी पुत्री कि आकस्मिक मृत्यु के कारण उपजे थे।जबकि कालिदास के महाकाव्य “रघुवंश” में अज के उद्गार अपनी पत्नी के शोक में निकले हैं जो उनके उच्च प्रेम की छाप छोड़ता है किन्तु निराला के सामने जवान पुत्री की मृत्यु अनायास आ खड़ी हुई थी । वहीँ भाई के शोक में डूबे राम का विलाप भी निराला की तुलना में कम है क्योंकि लक्ष्मण अभी केवल मूर्छित थे और उपचार के प्रयास और उसकी प्रक्रिया चल रही थी ।लक्ष्मण के जीने की आस अभी शेष थी।दूसरे,सरोज की मृत्यु के लिए निराला की कमज़ोर आर्थिक दशा जिम्मेदार थी ।वे अपनी पुत्री की देखभाल नहीं कर पाए थे,अतः उनका दुःख बहुत ही विकट था,जबकि राम के साथ ऐसी समस्याएं नहीं थी।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:2

पेट ही पचत, बेचत बेटा-बेटकी तुलसी के युग का ही नहीं आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों (खासकर बेटियों) को भी बेच डालने

की हृदय-विदारक घटनाएँ हमारे देश में घटती रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।

उत्तर: तुलसी युग में, लोगों की हालत इतनी खराब थी कि वे अपनी भूख को संतुष्ट करने के लिए अपने बेटे और बेटी को भी बेचते थे। आज के दौर में भी ऐसी घटनाएं रोज होती रहती हैं। अत्यधिक गरीब और पिछड़े क्षेत्रों में, यह स्थिति आज भी वही है। है। अगर किसान आत्महत्या कर रहे हैं, तो लोग अपनी बेटियों को भी बेचते हैं। अनैतिकता दोनों युगों में समान दिखती है।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:4
तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं? आज की बेकारी की समस्या के कारणों के साथ उसे मिलाकर कक्षा में परिचर्चा करें।

उत्तर: राम और लक्ष्मण को दो अलग-अलग माताओं ने जन्म दिया था। लेकिन वे कभी एक दूसरे के बिना नहीं रहते थे। राम सभी माताओं को समान मानते थे। किसी के लिए कोई भेद नहीं था। लक्ष्मण ने हमेशा अपने जीवन को अपने

भाई राम की छाया माना, और हमेशा छाया बने रहे। कोई भी भाई-बहन उसकी तरह त्याग और समर्पण नहीं कर सकते। इसलिए राम ने कहा कि लक्ष्मण जैसे भाई को दुनिया में नहीं पाया जा सकता।

12:1:8:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:5

यहाँ कवि तुलसी के दोहा, चौपाई, सोरठा, कवित्त, सवैया- ये पाँच छंद प्रयुक्त हैं। इसी प्रकार तुलसी साहित्य में और छंद तथा काव्य-रूप आए हैं। ऐसे छंदों व काव्य-रूपों की सूची बनाएँ।

उत्तर: तुलसी साहित्य में अन्य छंद और काव्य रूप आये हैं जो निम्नलिखित हैं:

छन्द: बरवै,छप्पय और हरिगीतिका।

काव्य-रूप:

रामचरित मानस(महाकाव्य) - प्रबंध काव्य

विनयपत्रिका - मुक्तक काव्य

गीतावली.कृष्णावली - गेय पद शैली ।